संस्कृत प्रचार पुस्तक माला सं० १०

संस्कृत प्रचार के

कतिपय रचनात्मक कार्यक्रम

तथा

उन्हें कार्यरूप में परिणत करने के लिये संस्कृत के समस्त विद्वानों, विद्यार्थियों, संस्कृतप्रचारक संस्थाओं तथा संस्कृतहितैषी नर-नारियों से विनीत अभ्यर्थना

लेखक—

वासुदेव द्विवेदी, शास्त्री

(सम्पादक—संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वाराणसी

विद्वद्भ्यो निवेदनम्

(१)

श्रीमन्तो महनीया विद्वद्वर्यास्तथोत्तमाश्छात्राः।
संस्कृत-सेवा-सद्मनि वीतवयस्का युवानश्च ॥

(२)

इदमद्य पुस्तकं वः सादर-सेवा-समर्पितं क्रियते।
कृपया स्नेहभरालस–नयनातिथितामिदं नेयम् ॥

(३)

एतस्मिन् निजनूतन–स्वल्पानुभवानुसारमस्माभिः।
सुरभारती–प्रचारोपायाः केचन विविच्य निर्दिष्टाः ॥

(४)

हिन्दीविदोऽपि सुजना ये सुरभाषानुरागिणः सन्ति।
तेषामपि बोधः स्यादिति खलु हिन्द्यामिदं लिखितम् ॥

(५)

पुस्तकमिदं पठित्वा श्रीमद्भिः किमपि नूतनं कार्यम्।
क्रियतां स्व-स्व-स्थाने इति मे भवतां निवेदनं पदयोः ॥

(६)

क्रान्तिमयेऽस्मिन् काले शान्तिरियं सर्वतोमुखीना नः।
न स्वस्मै न सुरगिरे हितावहा किन्तु हितहन्त्री ॥

(७)

पश्यत गान्धीजीवं वार्द्धक्येऽपि श्रमं कियत् कृतवान्।
सपदि विनोबा भावे जर्जरकायोऽपि कर्मठः कीदृक् ॥

(८)

इयति च पण्डितवर्गे जीवत्यपि या दशास्ति सुरवाचः।
विज्ञेयाऽखिलपण्डित–मण्डलभाले कलङ्कलेखेयम् ॥

(९)

को मे सपदि सहायः को वा मम दुःखदुःखितो विद्वान्।
इति सुरवाणी परितो विदुषां वदनावलोकनं कुरुते ॥

(१०)

तस्मात् मुक्त्वाऽलस्यं स्वार्थं स्वल्पीविधाय च स्वीयम्।
सङ्घटितैरिह भाव्यं विबुधैः सुरगीःप्रचारकार्येषु ॥

(११)

मामप्रथितमवृद्धं लघुकायं स्वल्पबुद्धिविभवं वा।
ज्ञात्वा नैव भवद्भिः कार्याऽवज्ञेति नैकशो याचे ॥

(१२)

एतस्य पुस्तकस्य च अन्ते यद्यत् निवेदनं मेऽस्ति।
तदवश्यं पठनीयं मननीयं पूरणीयं च ॥

(१३)

पुस्तकमिदं पठित्वा कृत्वा च तथाऽणकद्वयं व्ययितम्।
मत्प्रहित-पत्र-मध्ये श्रीमद्भिर्निजविचारणा लेख्या ॥

(१४)

एतस्य पुस्तकस्य च मुद्रण-प्रेषण-प्रचार-कार्यार्थम्।
रूप्यकमेकं याचे श्रीमद्भिस्तदपि निश्चितं प्रेष्यम् ॥

सार्वभौम—
संस्कृत प्रचार कार्यालयः काशी,

इति विदुषां विधेयो
वासुदेव द्विवेदी

प्राक्कथन

इस पुस्तक के प्रकाशन की आवश्यकता

तथा कुछ आवश्यक निवेदन

माननीय विद्वद्गण तथा संस्कृतानुरागी सज्जनों !
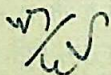
आज मैं यह पुस्तक संस्कृतभाषा प्रचार के कतिपय रचनात्मक कार्यक्रमों पर प्रकाश डालने के लिये प्रकाशित कर रहा हूँ। संस्कृत भाषा की महत्ता तथा उसके प्रचार की आवश्यकता तो आज सब लोग मानते हैं तथा अनेक संस्थायें एवं कतिपय संस्कृतानुरागी सज्जन भी व्यक्तिगत रूप से संस्कृत प्रचार के काम में लगे हुए हैं। परन्तु किसी संस्था या व्यक्ति द्वारा कुछ विशेष काम होता हुआ दिखाई नहीं देता। इसके अनेक कारणों में से पथप्रदर्शन का अभाव भी, हमारे विचार से, एक प्रमुख कारण है। इसका मुझे तब और भी निश्चितरूप से ज्ञान होता है जब कि अनेक विद्वान् एवं उत्साही विद्यार्थी हमसे पत्र द्वारा संस्कृत प्रचार के उपायों के सम्बन्ध में पूछा करते हैं। उन पत्रों के पढ़ने से मालूम होता है कि उन पत्रों के लेखक कुछ काम करने के लिये कटिबद्ध हैं पर उनके सामने कोई योजना न होने से वे कुछ कर नहीं पाते। इन्हीं सब कारणों से मैंने इस प्रकार की एक पथप्रदर्शक पुस्तक का प्रकाशित कर देना तथा उसे संस्कृत विद्या से सम्बन्ध रखने वाली समस्त संस्थाओं तथा सज्जनों के समीप में भेज देना आवश्यक समझा। तदनुसार कई महीनों से सोचते विचारते अर्थाभाव की दशा में भी आज यह पुस्तक प्रकाशित कर आप की सेवा में भेजी जा रही है। यदि कोई सज्जन संस्कृत प्रचार सम्बन्धी किसी भी काम में हमारे शरीर से भी सेवा लेना चाहेंगें तो हम उसके लिये भी सर्वदा तत्पर हैं पर इसके लिये सूचना हमें कुछ दिन पहले ही मिल जानी चाहिये।

इस पुस्तक का आद्योपान्त अवलोकन कर इसके सम्बन्ध में आप के जो विचार तथा यदि कुछ नये सुझाव हों तो कृपया उनसे हमें अवगत कराने की कृपा करें यह आप से विशेष अनुरोध है। साथ ही इस पुस्तक में उल्लिखित कार्यों में से आप अपने यहाँ किन किन कार्यों को सुसम्पन्न कर सकते हैं इसका निश्चय कर उसे लिख कर भेजने का कष्ट करें। इससे हमें यह विदित हो सकेगा कि समस्त भारत में कहाँ कितना काम हो रहा है और उसे हम पत्र-पत्रिका द्वारा प्रकाशित भी कर सकेगें। इसके साथ एक और निवेदन है—अभी द्रव्याभाव से इस पुस्तक की एक हजार ही प्रतियाँ प्रकाशित की गई हैं परन्तु इसकी कई हजार प्रतियाँ छपा कर देश के विभिन्न भागों में भेजनी हैं। अतः यदि आप इसके पुनः प्रकाशन तथा प्रचार में सहायता पहुँचाने की दृष्टि से किसी प्रकार एक रुपया पत्रोत्तर के साथ तत्काल भेज दें तो हमारी बड़ी सहायता होगी। इससे अधिक सहायता भेजना आपकी उदारता पर निर्भर है।

आशा है संस्कृत प्रचार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आप हमारी उपर्युक्त समस्त प्रार्थनाओं पर ध्यान देकर हमें अनुगृहीत एवं उत्साहित करेगें तथा स्वयं भी यश और पुण्य के भागी बनेगें।

माघ पूर्णिमा २०२६ वि०
काशी

विनीत निवेदक—
वासुदेव द्विवेदी

संस्कृत प्रचार के

कतिपय रचनात्मक कार्यक्रम

—:❀:—

पारस्परिक सौहार्द एवं संगठन

१—संस्कृतभाषा के प्रचार तथा उन्नति के लिये संस्कृत के विद्वानों में परस्पर सौहार्द, संगठन तथा एकता की सर्वप्रथम आवश्यकता है। परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि संस्कृतसमाज में इसका बड़ा ही अभाव है और इसीलिये संस्कृत विद्वानों द्वारा सञ्चालित कोई काम या सभासम्मेलन आदि कुछ दिनों तक भी चलने नहीं पाता। अतः संस्कृतविद्वानों को यदि संस्कृतभाषा तथा अपने समाज का वस्तुतः उत्थान करना है तो उन्हें अपने समाज से पारस्परिक, द्वेष, ईर्ष्या, असहिष्णुता, आक्षेप, अहम्मन्यता एवं पदलोलुपता आदि विघटक भावों को सर्वप्रथम दूर करना चाहिये तथा छोटे बड़े समस्त विद्वानों को मिल कर कार्य करने में संलग्न हो जाना चाहिये।

२—इस दोष को दूर करने के लिये सर्वप्रथम वयोवृद्ध तथा विद्यावृद्ध विद्वानों को चाहिये कि वे योग्यता एवं अवस्था का भेदभाव भूलकर अपने से कनिष्ठ अध्यापकों का सम्मान करें, उनकी सभामें उपस्थित हों, उनके यहाँ यदा कदा आया जाया करें, उनके साथ मिलकर काम करने में अपमान का अनुभव न करें, सभाओं में उन्हें दबाने का विचार न रक्खें तथा अपने ही उच्च पदों को प्राप्त करने की चेष्टा न कर नवीन विद्वानों को भी अपनी ओर से आगे बढ़ाने का प्रयत्न करें। वरिष्ठ विद्वानों द्वारा ऐसा किये जाने पर कनिष्ठ अध्यापक स्वयं ही उनका सम्मान करेंगे, उनके आदेशों का पालन करेंगे तथा उनके साथ मिल कर काम करने में प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

३—इसी प्रकार सस्कृत के विद्यार्थियों को भी परस्पर सौहार्द का भाव रखना चाहिये एवं मिलकर काम करने का प्रयत्न करना चाहिये। बड़े विद्यार्थियों को छोटे विद्यार्थियों का सम्मान करना चाहिये तथा स्नेह से काम लेना चाहिये।

४—संस्कृत पाठशालाओं तथा अंग्रेजी विद्यालयों के संस्कृताध्यापकों में भी परस्पर जितने सौहार्द एवं सहकारिता की आवश्यकता है उतनी दृष्टिगोचर नहीं होती। इस प्रकार संस्कृत के विशुद्ध विद्वानों तथा अंग्रेजी भाषा के साथ जिन लोगों ने संस्कृत का अध्ययन किया है उन लोगों में भी परस्पर स्नेह समादर तथा सहयोग का बहुत कम उदाहरण मिलता है। विशुद्ध संस्कृत के विद्वान्, अंग्रेजी के साथ संस्कृत पढ़े लिखे विद्वानों को अयोग्य समझते हैं और ये नवीन विद्वान् आधुनिक विषयों तथा व्यवहारज्ञान में पण्डितों को अयोग्य समझते हैं तथा पाडित्य में उनके समकक्ष न होने के कारण ईर्ष्या रखते हैं और उनकी उन्नति नहीं चाहते हैं। इस परिस्थिति का भी दूर होना नितान्त आवश्यक है। संस्कृत भाषा के प्रचार के लिये इन दोनों प्रकार के विद्वानों को पारस्परिक भेदभाव छोड़कर सम्मिलित रूप में कार्य करना चाहिये।

दोषत्रय का निराकरण

सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति तद् वृन्दमवसीदति॥

इस नीतिश्लोक में किसी भी समाज के असंघटित तथा दुखी होने में तीन कारण बतलाये गये हैं। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि वर्तमान पण्डितसमाज में ये तीनों दोष पूर्णरूप से विराजमान हैं और इसीलिये इस समाज की उन्नति नहीं होती। कोई पण्डित न तो किसी पण्डित को अपना नेता मानता है, न दूसरे का सभापति मन्त्री आदि होना सहन करता है और न अपने को और किसी विद्वान् से थोड़ा भी कम मानने के लिये तैयार है। सभी लोग नेता बनना चाहते हैं, सब लोग पदाधिकारी

बनना चाहते हैं और सभी लोग नाम कमाना तथा संभव हो तो उस सभा से स्वार्थसाधन करना चाहते हैं। इसका जो परिणाम होना चाहिये सो सबके सामने है।

अतः संस्कृत के विद्वानों को अबसे भी इन दोषों को दूर करने की ओर ध्यान देना चाहिये और उन तीनों दोषों से अपने को बचाने की चेष्टा करनी चाहिये।

विद्यार्थियों का ह्रास और उसे रोकने का उपाय

इस समय संस्कृत पाठशालाओं में विद्यार्थियों का भयंकर रूप से ह्रास हो गया है और निरन्तर होता जा रहा है। यदि इसके रोकने का उपाय नहीं हुआ तो कुछ ही वर्षों में अनेक पाठशालायें तोड़ देनी पड़ेंगी। हमारे विचार से इसे रोकने का सबसे आवश्यक उपाय है प्रथमा में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने का प्रयत्न करना। परन्तु यह तभी सफल हो सकता है जब प्रथमा में हिन्दी अंग्रेजी आदि समस्त विषयों की सुव्यवस्थित रूप से शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाय और अध्यापक परिश्रम तथा ईमानदारी से पढ़ाने के लिये कष्ट करें। जब पढ़ाई का काम सुव्यवस्थित रूप से होने लगेगा और विद्यार्थी समस्त विषयों में तथा बोलचाल एवं खेलकूद आदि में भी किसी हिन्दी विद्यालय के विद्यार्थियों से दुर्बल नहीं प्रत्युत उनसे भी तीव्र होगें तो अभिभावकों को स्वयं अपने बालकों को संस्कृत विद्यालय में भेजने की रुचि होगी और वैसी स्थिति में सम्भवतः संस्कृत के अध्यापक भी अपने बालकों को अपने ही विद्यालय में पढ़ने की अनुमति दे दें। पढ़ाई लिखाई का समुचित क्रम चल जाने पर शिक्षित पुरुषों से यह अनुरोध भी किया जा सकता है कि वे अपने बालकों को संस्कृत विद्यालयों में भेजें। और मेरा विश्वास है कि कम से कम ब्राह्मणों के लड़के तो हठपूर्वक भी उनके अभिभावकों से माँगे जा सकते हैं और वे दे भी सकते हैं। आवश्यकता है केवल प्रवेशिका और प्रथमा की शिक्षण-पद्धति के सुधारने तथा सर्वाङ्ग पूर्ण बनाने की। जब उन्हें संस्कृत पढ़ने में रस मिलेगा और वे अपने को योग्य बनते देखेगें तो उनमें से बहुत विद्यार्थी आगे भी अवश्य ही संस्कृत पढ़ेंगे।

संस्कृत विद्वानों को अपने कठोर परिश्रम द्वारा विद्यार्थियों को इतना योग्य बना देना चाहिये कि हिन्दी मिडिल स्कूल के समस्त विद्यार्थी संस्कृत पाठशालाओं में पढ़ने के लिये उत्सुक हो जायँ।

अतः समस्त विद्यालयों के सञ्चालकों तथा अध्यापकों को चाहिये कि वे अपने अपने विद्यालय की प्राथमिक शिक्षा की और उसके बाद अन्य कक्षाओं की भी परम्परागत आकर्षणविहीन तथा नानादोषपूर्ण गतिविधि में परिवर्तन कर उसे सामयिक तथा अल्प समय में अधिक बोधप्रद बनाने का प्रयत्न करें। अपना दिन काट लेने के लिये जिस किसी प्रकार से कुछ विद्यार्थियों को घेर घार कर रखना तथा उनका समय नष्ट करना सर्वथा अशोभनीय अवाञ्छनीय तथा अहितकर है। यदि उचित व्यवस्था न की जा सके तो ऐसी पाठशालाओं के चलने से कोई लाभ होने की संभावना नहीं है।

सूचना—हमारे यहाँ से संस्कृत शिक्षा सुधार के सम्बन्ध में २ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उन्हें मँगा कर देखना चाहिये और उनमें निर्दिष्ट उपायों को कार्यरूप में व्यवहृत करना चाहिये। इसके लिये सरकार से भी अधिकाधिक सहायता लेने के लिये प्रयत्न होना चाहिये।

प्रौढ़ पाण्डित्य की रक्षा

यह किसी भी संस्कृत विद्वान् से छिपा नहीं है कि संस्कृत के प्रौढ़ पाण्डित्य का शनैः शनैः ह्रास होता जा रहा है। काशी से निकलने वाली "जन-वाणी" नामक समाजवादी मासिक पत्रिका में एक बार मेरठ के एक विद्वान् का लेख छपा था जिसमें उन्होंने दर्शन के कुछ मूल तथा टीका ग्रंथों के नाम का उल्लेख करते हुए लिखा था कि इतनी पुस्तकों का पढ़ाने वाला अब कोई काशी में भी नहीं मिल सकता। यद्यपि उनका यह कथन अत्युक्तिपूर्ण था तथापि सर्वथा असत्य नहीं था। क्योंकि उन ग्रंथों का पठन पाठन लुप्त सा हो गया है। परन्तु संस्कृत समाज के लिये यह परिस्थिति सर्वथा अशोभनीय और लज्जस्पद है। ऋषिसन्तान संस्कृतसमाज के लिए वह-दिन महान् दौर्भाग्य-पूर्ण होगा जिस दिन यहीं के विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों का अर्थ लगाने वाले व्यक्तियों का यहीं अभाव हो जायगा। पर आश्चर्य नहीं कि यह दिन थोड़े

ही दिनों में हमें देखना पड़े। अतः इस महान् निधि की रक्षा का प्रयत्न होना परम आवश्यक है।

इसके तीन उपाय हैं। एक तो यह कि तत्तत् प्रान्तों की सरकार तथा विशेष सम्पन्न पुरुषों से अनुरोध किया जाय कि वे अपने प्रान्त के कुछ विशिष्ट विद्वानों को केवल साहित्य की रक्षा की दृष्टि से घर बैठे इतनी पर्याप्त सहायता दें जिससे कार्यान्तर में न लग कर वे केवल पठन पाठन एवं चिन्तन द्वारा शास्त्रों की रक्षा किया करें। दूसरा उपाय यह है कि कुछ ऐसे विद्यानुरागी तथा विद्वान् साधुओं को तैयार किया जाय जो किन्हीं एक दो शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् बन कर अपने मठ में विराजमान रहें और अपने शिष्यों को पढ़ाया करें। साधुओं को परिवारपोषण की चिन्ता नहीं अतः वे चाहें तो प्रौढ़ पाण्डित्य की बहुत अंश में रक्षा कर सकते हैं। प्रत्येक बड़े मठ में इस प्रकार के एक महान् विद्वान् साधु के रहने का नियम बनना चाहिये। अ॰भा॰ साधु सम्मेलन को चाहिये कि वह इसके लिये प्रयत्नशील हो। प्रत्येक सम्प्रदाय के भिन्न भिन्न साधुसम्मेलनों को भी पृथक्-पृथक् रूप से इधर ध्यान देना चाहिये। इस से संस्कृत साहित्य की रक्षा, साधु समाज का सम्मान तथा मठों की शोभा सब कुछ सिद्ध हो सकता है। मेरे विचार से साधु समाज को प्रौढ़ विद्वान बनाने का प्रयत्न करना ही संस्कृत के प्रौढ़ पाण्डित्य की रक्षा का अब प्रधान उपाय है। ब्राह्मण साधुओं को तो इसके लिए अवश्य प्रयत्नशील होना चाहिए। एक तीसरा उपाय और है। यदि कुछ सम्पन्न ब्राह्मण विद्यार्थी विशेष धन का लोभ छोड़ कर केवल अपने पूर्वजों द्वारा समर्पित सारस्वत निधिकी रक्षा की दृष्टि से कुछ विषयों में प्रौढ़ पांडित्य का अर्जन करने का साहस करें तो इससे भी कुछ प्राचीन शास्त्रों की रक्षा हो सकती है।

वाग्वर्द्धिनी सभा

१—प्रत्येक संस्कृत विद्यालय में अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के सम्मिलित सहयोग से एक पाक्षिक वाग्वर्द्धिनी सभा चलायी जाय जिसमें अध्यापक तथा विद्यार्थी हिन्दी एवं संस्कृत में संस्कृतभाषा संस्कृतसाहित्य तथा भारतीय

संस्कृति की महत्ता उपयोगिता तथा उसके प्रचार की आवश्यकता के सम्बन्ध में शुद्ध भाषा में पांडित्यपूर्ण व्याख्यान देने का अभ्यास करें। उपर्युक्त विषयों पर पांडित्यपूर्ण तथा प्रभावशाली व्याख्यान देने की योग्यता प्राप्त कर लेना भी संस्कृत प्रचार की दृष्टि से एक आवश्यक काम है।

सूचना—संस्कृत भाषा, संस्कृत साहित्य तथा भारतीय संस्कृति-सभ्यता के सम्बन्ध में व्याख्यान देने के लिये जिन ग्रन्थों का अध्ययन करना आवश्यक है उनकी सूची कार्यालय द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी। जो विद्वान् एवं विद्यार्थी इन विषयों पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान देने की योग्यता प्राप्त करना चाहें वे इस सूची को देखकर अपने लिये उपयोगी पुस्तकों को मँगाने का प्रयत्न करें।

संस्कृत-व्याख्यान-माला का आयोजन

१—विशिष्ट नगरों में, जहाँ संस्कृत विद्यालयों के अतिरिक्त और भी अनेक शिक्षासंस्थाएँ हो, वहाँ के संस्कृत विद्वानों को तथा वहाँ यदि कोई संस्कृतपरिषद हो तो उसे भी उन स्थानों पर प्रतिमास स्थानीय तथा बाहर के विद्वानों द्वारा संस्कृत अथवा हिन्दी में संस्कृत साहित्य के विषय में प्रति वर्ष दो चार विशिष्ट व्याख्यान कराने का आयोजन करना चाहिये।

२—इस आयोजन में नगर के सभी विद्वानों, प्रतिष्ठित नागरिकों तथा उच्चावच सभी सरकारी कर्मचारियों को आग्रहपूर्वक आमन्त्रित करना चाहिये और उन्हीं में से किसी विशिष्ट पुरुष को सभापति बना देना चाहिये जिससे उनका तथा उनके वर्ग का सहयोग प्राप्त हो सके।

३—यदि कोई विद्वान् केवल अंग्रेजी में ही व्याख्यान दे सकते हों तो उनका भी व्याख्यान कराना चाहिये और वहाँ अधिक से अधिक अंग्रेजीविज्ञ विद्वानों को एकत्र करना चाहिये।

सभा-सम्मेलनों की स्थापना

१—प्रत्येक जिला के मुख्य नगर में वहाँ के विद्वानों तथा संस्कृत प्रेमियों को जिला संस्कृत प्रचार समिति अथवा जिला संस्कृत-साहित्य सम्मेलन

की स्थापना करनी चाहिये। जिला के विभिन्न स्थानों में शाखा सभायें भी स्थापित हों।

२—प्रान्त की राजधानी में वहाँ के विद्वानों द्वारा प्रान्तीय सभा का संगठन तथा संचालन होना चाहिए। प्रान्तीय सभा के संचालकों को जिला सभाओं के स्थापन का प्रयत्न करना चाहिये तथा उनके वार्षिकोत्सव मनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिये।

३—अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन को, जिसका प्रधान कार्यालय इस समय भारत की राजधानी दिल्ली में है, चाहिए कि वह एक या दो ऐसे वैतनिक प्रचारक रक्खे जो प्रान्तीय सभाओं की स्थापना, संचालन तथा उनके द्वारा जिला सभाओं की स्थापना तथा संचालन आदि की व्यवस्था करें, उनके कार्यों का निरीक्षण करें, उसका विवरण अखिल भारतीय सम्मेलन को दें तथा उनका प्रदर्शन करें। ऐसा करने से ही अ० भा० सम्मेलन का अखिल भारतीय रूप ठीक होगा और उसका सुदृढ़ सङ्गठन एवं प्रचार होगा।

उपर्युक्त सभा-सम्मेलनों के साथ ही १—संस्कृत लेखक संघ। २—संस्कृत पत्रकार संघ। ३—संस्कृत गीतकार संघ। ४—संस्कृत प्रचारक संघ तथा ५—संस्कृत छात्र संघ आदि संस्थाओं का भी संघटन तथा वार्षिकोत्सव होना चाहिए।

महिला-संस्कृत-सम्मेलन

४—संस्कृतज्ञ तथा संस्कृतानुरागी महिलाओं का संगठन कर संस्कृत महिला सम्मेलन की भी स्थापना तथा संचालन करना चाहिए। अ० भा० संस्कृत सम्मेलन को चाहिये कि वह अखिल भारतीय संस्कृतज्ञ महिलाओं की एक समिति संघटित करें।

भारतीय संस्कृति का महत्त्वकीर्तन तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से संस्कृतप्रचारार्थ अनुरोध।

१—संस्कृतज्ञ तथा संस्कृतानुरागी विद्वानों को लेख, व्याख्यान तथा प्रवचन आदि द्वारा भारतीय संस्कृति का महत्त्व सर्वसाधारण तथा शिक्षित-

समाज को समझाना चाहिए जिससे कि संस्कृति के अध्ययन के व्याज से संस्कृत के अध्ययन की ओर उनकी रुचि हो।

२—आज कल अनेक स्थानों पर संस्कृतिक सभा, सम्मेलन, परिषद्, गोष्ठी, क्लब आदि चल रहे हैं। उनके संचालकों तथा सदस्यों से अनुरोध करना चाहिये कि वे अपनी संस्थाओं में संस्कृत के पठनपाठन का भी आयोजन करें जिससे उन्हें अपनी संस्कृति का यथार्थ ज्ञान हो सके।

हिन्दी-अंग्रेजी विद्यालयों में संस्कृत-परिषद्

१—प्रत्येक हिन्दी अंग्रेजी विद्यालय एवं महाविद्यालय में संस्कृत के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने विद्यालय में एक संस्कृत-परिषद् की स्थापना करें, उसे पाक्षिक अथवा मासिक रूप में चलावें, बाहरी विद्वानों को बुलाकर संस्कृत में भाषग करावें तथा उसका समारोह के साथ वार्षिक अधिवेशन करें।

२—इस परिषद के संचालकों को चाहिये कि वे अपने वार्षिक अधिवेशनों के अवसर पर व्याख्यानों के अतिरिक्त संस्कृत के नाटक, एकांकी नाटक, गीत, प्रहसन, वादविवाद, कवितापाठ, कविदरवार आदि का भी आयोजन करें।

संस्कृतभाषा तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का व्यवहार

१—प्रत्येक विद्यालय के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिए कि वे कम से कम विद्यालय तथा छात्रावास में रहते हुए पठन-पाठन, वार्तालाप, पूजापाठ, संस्कृतज्ञों का आतिथ्य, पत्रव्यवहार तथा यज्ञयाग आदि में पचास प्रतिशत अवश्य ही संस्कृत का व्यवहार करें। हिन्दी बोलते समय भी संस्कृत-निष्ठ हिन्दी का ही व्यवहार करना चाहिये।

२—उच्च कक्षा का अध्ययन भी नहीं पूरा तो कम से कम पचास प्रतिशत अवश्य ही संस्कृत में हो। यदि अध्यापकों में ऐसी योग्यता न हो तो उन्हें इस योग्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

३—विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाय कि यदि उन्हें गुरुजनों से कुछ कहना या पूछना हो तो बिना सन्देह भय और संकोच के संस्कृत का

ही व्यवहार करें। शुद्ध अथवा अशुद्ध जैसा भी उन्हें आता हो संस्कृत में ही बोला करें। इस दिशा में पहले अध्यापकों को ही अग्रसर होना चाहिये तभी विद्यार्थी उनसे संस्कृत में वार्तालाप कर सकेंगे।

४– विद्यालय तथा छात्रावास के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को कुछ व्यवहारोपयोगी संस्कृत वाक्य कण्ठस्थ करा दिये जाँय और उन वाक्यों का प्रयोग करना उनके लिए अनिवार्य कर दिया जाय। इसी प्रकार पाठशालीय भृत्यों को भी कुछ वाक्य कण्ठस्थ करा दिये जाँय।

सूचना—कार्यालय द्वारा एक "संस्कृत वाक्य संग्रह" नामक छोटी पुस्तक प्रवेशिका के विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी है। उसे मँगा कर प्रारम्भिक विद्यार्थियों को कण्ठस्थ करा देना चाहिये।

परिवार में संस्कृत प्रचार

१—संस्कृत के विद्वानों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने परिवार के समस्त स्त्री एवं पुरुष सदस्यों को कुछ न कुछ संस्कृत अवश्य सिखावें।

२—यदि अधिक न हो सके तो प्रत्येक बालक-बालिका तथा प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष को स्तुति प्रार्थना आदि के कुछ श्लोक अवश्य कण्ठस्थ करा दें जिससे कि दैनिक तथा विशेष अवसरों पर होने वाले पूजा पाठ के अवसर पर वे सब लोग स्वयं भी पूजा पाठ के श्लोकों का उच्चारण कर सकें।

३—समस्त नवयुवक विद्वान् तथा विवाहित विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपनी अपनी स्त्रियों को कुछ न कुछ संस्कृत अवश्य सिखावें। यदि किसी स्त्री को व्याकरणानुसार संस्कृत पढ़ाना असम्भव हो तो उन्हें प्रत्येक देवता की दो चार स्तुति प्रार्थनायें, तुलसीदान दीपदान के मन्त्र, सूर्य तथा चन्द्र को अर्घ देने के मन्त्र, दुर्गा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय के सब श्लोक, स्त्री शिक्षोपयोगी कुछ श्लोक तथा महिलोपयोगी संस्कृत गीत अवश्य कण्ठस्थ करा दें। संस्कृत पण्डितों की स्त्रियों का दो चार श्लोकों के भी ज्ञान से रहित-रहना हमें बहुत ही दुःखद तथा लज्जास्पद प्रतीत होता है।

४—वर्तमान समय में संस्कृत विद्वानों की इस बात के लिए बड़ी निन्दा हो रही है कि वे दूसरों को तो संस्कृत पढ़ने का उपदेश देते हैं पर स्वयं अपने

लड़कों को अंग्रेजी पढ़ाते हैं। इस कलंक को दूर करने के लिये विद्वानों को चाहिये कि वे अपने लड़कों को अंग्रेजी पढ़ाते हुए भी स्वतन्त्र रूप से संस्कृत का सुयोग्य विद्वान् अवश्य बनावें। जिनके कई लड़के हों उन्हें तो अपने एक दो लड़कों को अवश्य ही संस्कृत का विशुद्ध विद्वान् बना देना चाहिये। संस्कृत विद्वानों के घर से सर्वथा संस्कृत का लोप हो जाय तो सचमुच ही पण्डित समाज के लिए महान् कलंक, लज्जा एवं शोक का विषय है।

सरल संस्कृत का प्रयोग

१—संस्कृत के विद्वानों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना के अतिरिक्त साधारण लिखने पढ़ने तथा वार्तालाप आदि में अत्यन्त सरल संस्कृत का प्रयोग करें। "कापूस्ते, वम्भण्यताम्, कथं घघति भवान्; कस्मिन्ननेहसि आगतः कुत्र भवतां निकायः, वरीवर्तते" आदि क्लिष्ट वाक्यों का प्रयोग न करें।

२—लेख निबन्ध आदि लिखने में यथासम्भव सन्धि एवं समास का अत्यन्त अल्प प्रयोग किया जाय। उदाहरण के रूप में हमने अपनी "सरल संस्कृत निबन्धादर्श" नामक पुस्तक में इसी प्रकार की सरल भाषा का प्रयोग किया है।

३—नवीन कविताओं में भी यदि छन्दोभंग बचाते हुए सन्धि का प्रयोग न किया जाय तो कोई हानि नहीं।

४—यदि छन्दोभंग न होता हो तो प्राचीन गद्य पद्य भी यथासम्भव सन्धिरहित रूप में प्रकाशित किये जाँय और समस्त पदों के बीच में पृथक्करण के चिन्ह दिए जाँय।

५—कुछ विद्वान् संस्कृत भाषा को सरल बनाने के लिए कुछ व्याकरण सम्बन्धी नियमों में भी परिवर्तन करना चाहते हैं। जैसे—द्विवचन न रखना, चार ही लकार रखना, सन्धि न करना, हलन्त शब्दों को अजन्त के रूप में प्रयुक्त करना, केवल परस्मैपदी धातुओं का ही प्रयोग करना, दृश और पश्य दोनों का सब लकारों में प्रयोग करना आदि। इस विषय में भी विद्वानों को विचार करना चाहिये।

इस प्रकार के सरलीकरण के पक्ष में "कीदृशं संस्कृतम्" नामक एक पुस्तक भारतीय विद्या प्रचार समिति आगरा के मन्त्री श्री आचार्य श्याम कुमार जी द्वारा लिखी गई है। विद्वानों को उसे देखना चाहिये और उस पर विचार करना चाहिए। पुस्तक लेखक के पास से ही मिलती है।

सूचन।—कार्यालय द्वारा सरल संस्कृत में अनेक पुस्तकों के लिखने तथा प्रकाशित करने का विचार है। इसी दृष्टि से इस समय एक ऐसे शब्दकोष का निर्माण किया जा रहा है जिसमें संस्कृत के कम से कम ऐसे शब्दों और धातुओं का संग्रह होगा जो हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं में खूब प्रचलित हैं और जिनसे सामान्य व्यवहार का सारा काम चल सकता है। यह कोश शीघ्र ही प्रकाशित किया जायगा।

रात्रि संस्कृत पाठशाला

१—प्रत्येक संस्कृत विद्यालय के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने विद्यालय में अथवा किसी समीपवर्ती उपयुक्त स्थान पर एक दो घंटे के लिये एक रात्रि पाठशाला चलाने का प्रयत्न करें। इस पाठशाला में प्रत्येक अध्यापक तथा सुयोग्य विद्यार्थी बारी-बारी से पढ़ाने का कष्ट करें। इस पाठशाला में यदि कोई अवकाश प्राप्त विद्वान् पढ़ाना चाहें तो उन्हें भी अवसर दिया जाय। बड़े-बड़े नगरों में इस प्रकार की अनेक पाठशालायें चल सकती हैं।

२—इस पाठशाला में पढ़ने के लिये समीपवर्ती सभी सद्गृहस्थ, नागरिक, सरकारी अफसर, सेठ, साहूकार, बनिया, किसान मजदूर तथा असंस्कृत पंडा पुजारी, पुरोहित साधु एवं महन्त आदिकों को आग्रह के साथ आमन्त्रित किया जाय और उन्हें सरल रीति से संस्कृत सिखायी जाय।

६—जिन किसान मजदूर आदि निरक्षर अथवा केवल साक्षर लोगों के लिये अधिक संस्कृत पढ़ना असम्भव हो उन्हें कम से कम स्तुति प्रार्थना के भी १०-५ श्लोक कण्ठस्थ करा दिये जायँ।

त्रैमासिक संस्कृत शिक्षण

४—यदि यह पाठशाला प्रति मास न चल सके तो कम से कम प्रति वर्ष तीन मास तक अवश्य चलायी जाय। ये मास यदि कार्तिक, अगहन एवं पूस के हों तो अधिक अच्छा होगा। इन तीन महीनों में पढ़ने वालों को इतनी शिक्षा दे दी जाय जिससे वे संस्कृत लिखने बोलने एवं समझने में सामान्य रूप से समर्थ हो जायँ और उनका संस्कृत में प्रवेश हो जाय।

५—जिस नगर अथवा स्थान में कोई संस्कृत पाठशाला न हो वहाँ भी रात्रि पाठशाला चलाकर वहाँ की जनता को संस्कृत पढ़ाने के लिये प्रयत्न करना चाहिये।

सूचना—जो सज्जन यह कार्यक्रम चलाना चाहें वे पाठ्यक्रम के विषय में हम से परामर्श करने की कृपा करें।

ग्राम पाठशाला या गृहस्थपण्डितों द्वारा संस्कृतशिक्षण

बहुत से नगर तथा ग्राम ऐसे हैं जहाँ कोई पाठशाला नहीं पर कोई संस्कृत के पण्डित अवश्य हैं। ऐसे स्थानों में वहाँ के पण्डितों को चाहिये कि वे उस स्थान की जनता को अपनी योग्यता समय एवं सुविधा के अनुसार कुछ न कुछ संस्कृत अवश्य सिखाया करें। प्राचीन काल में जनता को शिक्षा देने की हमारी यही पद्धति रही है जो आज कल सर्वथा लुप्त हो गई है। संस्कृत का प्रचार तथा अपने कर्तव्य पालन की दृष्टि से उसे पुनः प्रचारित करने की आवश्यकता है।

सूचना—जिस नगर या गाँव के जो विद्वान् जब से अपने घर पर संस्कृत शिक्षण का कार्य प्रारम्भ करें उसकी सूचना हमें अवश्य देने की कृपा करें।

कन्या संस्कृत पाठशाला

१—प्रत्येक नगर में एक कन्या संस्कृत पाठशाला चलायी जाय और उसमें कोई अनुभवी सदाचारी एवं वृद्ध व्यक्ति अध्यापन के लिये नियुक्त किये जायँ।

२—जो कन्यायें हिन्दी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर पढ़ना छोड़ देती हैं उन्हें इस पाठशाला में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। उनके अभिभावकों से अनुरोध किया जाय कि वे अपनी कन्याओं को विवाह के पूर्व तक इस पाठशाला में संस्कृत पढ़ने दें।

३—नगर के समस्त संस्कृत के पण्डित तथा वैद्य ज्योतिषी कर्मकाण्डी आदि संस्कृतज्ञ व्यक्ति अनिवार्य रूप से अपनी कन्याओं को इस पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजें तथा अपने इष्ट मित्रों से भी इसके लिए अनुरोध करें। संस्कृत के पण्डितों को अपनी कन्याओं को इस योग्य बना देना चाहिये कि वे कन्या पाठशालाओं में अध्यापन कर सकें। यदि हिन्दीशिक्षित विधवाओं को भी संस्कृत की शिक्षा देने तथा उनके द्वारा कन्या पाठशालाओं में संस्कृत शिक्षा दिये जाने की व्यवस्था की जा सके तो और उत्तम होगा।

४—जो कन्यायें प्रथमा मध्यमा आदि परीक्षा देने में असमर्थ हों उन्हें ६ मास अथवा १ वर्ष में संस्कृत व्याकरण का साधारण ज्ञान करा दिया जाय तथा स्तुति, प्रार्थना, पूजापाठ, धर्म एवं नीति आदि के श्लोक कण्ठस्थ करा दिये जायँ। इसी समय संस्कृत गीतों का भी उन्हें अभ्यास करा दिया जाय।

५—यदि यह पाठशाला प्रतिदिन चार पाँच घण्टे तक न चल सके तो सायंकाल में ही एक दो घण्टे तक चलायी जाय।

विधवाओं को संस्कृत शिक्षा

उच्च वर्ग के हिन्दू समाज में बहुत ऐसी विधवायें हैं जो साधारण रूप से हिन्दी अथवा अपनी अपनी प्रान्तीय भाषा जानती हैं पर निष्क्रिय होकर अपना वैधव्य जीवन बिताती हैं। ऐसी विधवाओं को यदि संस्कृत शिक्षा देकर उन्हें धर्म-सदाचार-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ाई जाँय और पढ़ लेने के बाद उन्हें गृहस्थ बालक-बालिकाओं को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाय तो इससे संस्कृत प्रचार के साथ साथ उनका भी जीवन सक्रिय एवं सफल हो सकता

है। ब्राह्मण विधवाओं में तो इसका विशेष प्रचार होना चाहिये। अतः संस्कृत समाज को इस ओर भी ध्यान देना चाहिये।

कथावाचन एवं प्रवचन द्वारा संस्कृत प्रचार

२—संस्कृत के अवकाशप्राप्त तथा विद्यालयों में अध्यापन करने वाले अध्यापकों को चाहिये कि वे कभी कभी अपने विद्यालयमें अथवा अन्य किसी समीपस्थ उपयुक्त स्थान पर कथा बाँचने तथा प्रवचन करने का भी आयोजन किया करें। यदि सर्वदा न हो सके तो व्रत, पर्व, उत्सव आदि के अवसर पर तो अवश्य ही इसका आयोजन होना चाहिये।

इस आयोजन में मुख्यरूप से महाभारत, श्रीमद्भागवत, वाल्मीकिरामायण, उपनिषद्, गीता तथा योगवाशिष्ठ इन ६ ग्रन्थों की कथायें तथा प्रवचन होने चाहिये।

२—यदि श्रोता पसन्द करें तो संस्कृत काव्यों के द्वारा भी कथायें कही जा सकती हैं और वह पहले से भी अधिक रुचिकर हो सकता है। हमारा अनुमान है कि यदि रघुवंश का द्वितीय तथा चतुर्दश सर्ग, किरातार्जुनीय तथा शिशुपालवध का प्रथम द्वितीय सर्ग, कादम्बरी का शुकनासोपदेश एवं कुमारसम्भव का तृतीयससर्ग सुन्दर स्वर में श्लोकों को पढ़कर कथा के रूप में बाँचा जाय तो श्रोताओं को अधिक आनन्द आ सकता है और उससे उत्तम शिक्षा भी मिल सकती है। यह उदाहरण मात्र है। ऐसे और भी बहुत स्थल हैं।

काव्याध्ययन का काव्यप्रकाशोक्त समस्त फल प्राप्त करने के लिये प्रवचनपटु पण्डितों को चाहिये कि वे काव्यों को पाठशाला तक ही सीमित न रखकर सर्वसाधारण जनता के समक्ष भी उन्हें प्रस्तुत करने का प्रयत्न करें।

बारातों में संस्कृत प्रचार

१—बारातों में संस्कृत में शास्त्रार्थ करने की प्रथा बहुत दिनों से चली आ रही है। निस्सन्देह संस्कृत भाषा के प्रचार का एक यह भी उत्तम माध्यम है परन्तु वर्तमान समय की बारातों में जहाँ कि संस्कृतज्ञों की संख्या नहीं के बरा-

कर रहती है, केवल दो पण्डितों द्वारा व्याकरण जैसे नीरस विषय पर शास्त्रार्थ करना, और वह भी युद्ध और विजिगीषा के रूप में, विशेष रुचिकर एवं शोभनीय नहीं प्रतीत होता। अतः इस समय की बारातों में, जहाँ कम से कम १०-५ की संख्या में भी संस्कृत के सुयोग्य विद्वान् न हों, शास्त्रार्थ की अपेक्षा संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में व्याख्यान देना, संस्कारों का महत्त्व समझाना, दोनों पक्ष से उच्चकोटि के धार्मिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मङ्गल श्लोकों का कहना तथा विद्यार्थियों द्वारा अन्त्याक्षरी कराने आदि का-आयोजन किया जाय तो उत्तम हो।

संस्कृत नाटकों का अभिनय

१—एक ऐसी संस्कृत नाटक मण्डली का संगठन किया जाय जो सभी ऐसे नगरों में, जहाँ कम से कम एक दो हाईस्कूल, हिन्दी संस्कृत पाठशालायें तथा कचहरी आदि सरकारी संस्थायें हों, घूम घूम कर प्राचीन तथा नवीन संस्कृत नाटकों का अभिनय करे। इस मण्डली का व्यापारिक रूप हो और सभी पात्र वैतनिक रहें। पात्रों की योग्यता कम से कम मध्यमा तक की अवश्य होनी चाहिये।

२—संस्कृत के प्रत्येक विद्यालय एवं महाविद्यालय को चाहिये कि वे अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक प्राचीन या नवीन संस्कृत नाटक का अभिनय करें। यदि पात्रों एवं साधनों की न्यूनता के कारण किसी बड़े नाटक का अभिनय करना असंभव हो तो कम से कम किसी नाटक के एक ही आकर्षक अङ्क का अथवा किसी नवीन एकाङ्की नाटक का अभिनय करें।

३—इसी प्रकार हिन्दी अंग्रेजी की शिक्षासंस्थाओं को भी अपने उत्सवों में संस्कृत विद्यार्थियों द्वारा कोई संस्कृत का सुन्दर दृश्य दिखाने का प्रयत्न करना चाहिये।

४—यदि कहीं किसी प्रकार का भी नाटक कर सकना असम्भव हो तो वहाँ के विद्यार्थी अभिनय के रूप ये कुछ श्लोकों का पाठ करें। जैसे—कोई विद्यार्थी वृद्ध का रूप धारण करके वृद्धावस्थासम्बन्धी श्लोक पढ़े।

इसी प्रकार अनेक विद्यार्थी भिन्न-भिन्न रूप बनाकर तत्तद्रूपसम्बन्धी श्लोकों का पाठ करें। इस कार्यक्रम में मानवजीवन से सम्बन्ध रखने वाले तथा विभिन्न मानसिक अवस्थाओं के सूचक हृदयग्राही श्लोकों का आकर्षक स्वर में तथा अभिनय के रूप में पाठ होना चाहिये।

५—उत्सव के अवसर पर यदि अध्यापक तथा विद्यार्थी गण संस्कृत के प्राचीन एवं नवीन कवियों का रूप बनाकर अपने काव्यों के २–४ सुन्दर श्लोकों का पाठ करें तो यह भी एक सुन्दर कार्यक्रम हो सकता है। ऐसे प्रसंगों में भोज तथा विक्रम आदि की राजसभा भी लगायी जा सकती है।

६—अभिनय के अतिरिक्त संस्कृत में प्रसहन, संस्कृत के आधुनिक नवीन तर्जों के गीत, कवितापाठ, संस्कृत में मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर, संस्कृत पद्यों में ही वादविवाद आदि का भी यथासम्भव कार्यक्रम रखना चाहिये।

इन कार्यक्रमों का पहले से ही सुन्दर अभ्यास रखना चाहिये।

सूचना।—कार्यालय द्वारा कुछ एकांकी नाटकों का संग्रह तथा अभिनय के रूप में पढ़ने योग्य श्लोकों का संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। अभिनयप्रेमी अध्यापक तथा विद्यार्थी उन्हें मँगाने की कृपा करेंगे।

संस्कृत गीतों का प्रचार

१—गीत में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों, विद्यार्थियों तथा संस्कृतज्ञों को चाहिये कि वे अपने उत्सवों में अथवा मनोविनोद के लिए प्राचीन तथा नवीन ढंग के संस्कृत गीतों को ही व्यवहार में लाने की चेष्टा करें।

२—प्रत्येक अध्यापक, विद्यार्थी तथा संस्कृतज्ञ व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने समीपवर्ती नर्तक, नर्तकी, वेश्या, गायक, सूरदास, कत्थक, कथावाचक भजनोपदेशक तथा अन्य गायक सज्जनों को संस्कृत गीतों की पुस्तकें दे, उन्हें शुद्ध बाँचने का अभ्यास करावे, उन्हें राग बतावे तथा सर्वत्र नृत्य गीत आदि में १–२ संस्कृत गीतों को अवश्य गाने के लिए उनसे अनुरोध करे।

३—विवाहादि उत्सवों में स्त्रियाँ अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषा में गीत गाती हैं। उत्सवों में जब सम्बन्धी लोग भोजन करने के लिए बैठते हैं उस

समय भी स्त्रियाँ गीत गाती हैं जिन्हें "गाञ्री" कहते हैं। सुयोग्य अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपनी अपनी प्रान्तीय भाषा में प्रचलित तर्जों के अनुरूप गीत बनावें, उन्हें प्रकाशित करा दें तथा शिक्षित महिलाओं में उनका प्रचार करें। संस्कृतज्ञ सज्जनों के घर होनेवाले उत्सवों में अनिवार्य रूप से संस्कृत गीतों का प्रचार होना चाहिये। गीतों के अभाव में स्त्रियों द्वारा सुन्दर श्लोक भी पढ़े जा सकते हैं।

४—रेडियो विभाग से अनुरोध किया जाय कि वह रेडियो द्वारा संस्कृत गीतों का भी प्रचार करे तथा उसे सुन्दर भी गीत बनाकर दिये जाँय।

सूचना—कार्यालय द्वारा पुरुषों तथा स्त्रियों के गाने योग्य कुछ गीत दो पुस्तकों में छपे हुए हैं। स्त्रियों के जो गीत हैं वे भोजपुरी प्रान्त के तर्जों में हैं। भारतवर्ष के विभिन्न विद्वानों के बनाये हुए कुछ और गीत संकलित हैं जिनका शीघ्र ही प्रकाशन किया जायगा। गीतप्रेमी सज्जन उन पुस्तकों को मँगा कर पूर्ण रूप से गीतों का प्रचार करने की कृपा करें।

संस्कृत-कवि-सम्मेलन

१—संस्कृत सभाओं तथा विद्यालयों के सञ्चालकों को अपने वार्षिकोत्सव में तथा स्वतंत्र रूप से भी कभी-कभी संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन करना चाहिये। इस सम्मेलन में कविजनों द्वारा कविता, गीत एवं कथा कहानी आदि रचनायें भी सुनायी जाँय।

२—यदि कोई विद्यार्थी अन्यनिर्मित कविताओं को भी सुन्दर स्वर में सुना सकते हों तो उन्हें भी सम्मेलन में भाग लेने देना चाहिये। प्रत्येक विद्यालय के विद्वानों को चाहिये कि वे अपने कुछ विद्यार्थियों को कविता-पाठ एवं गीतपाठ करने का अभ्यास करावें। यह बहुत ही आवश्यक काम है।

यदि कहीं हिन्दी कवि सम्मेलन होता हो तो संस्कृत कवियों को वहाँ भी संस्कृत कविता सुनाने के लिए उसके आयोजकों से अनुरोध करना चाहिये

और वहाँ इतने सुन्दर ढंग से कविता पढ़नी चाहिये कि श्रोता उसे बार-बार सुनने के लिये अनुरोध और आग्रह करें।

साहित्य का प्रचार

१—जिस प्रकार ईसाई प्रचारक तथा बौद्ध, जैन, कम्यूनिष्ट, सोशलिस्ट आदि व्यक्ति अपने साहित्य को जनता के घर घर पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं उसी प्रकार संस्कृत विद्यालयों के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने समीपवर्ती गाँवों में जाकर प्रत्येक घर में ऐसे साहित्य को पहुँचा दें जिसके द्वारा उस घर के व्यक्ति कुछ संस्कृत सीख सकें तथा संस्कृत साहित्य के विभिन्न अङ्गों का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह काम संस्कृत सभायें भी करें।

२—अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे सामान्य जनता के अतिरिक्त उनके समीप जितने छोटे-बड़े सरकारी कर्मचारी तथा बड़े से बड़े हिन्दू अफसर हों उनके पास जायें तथा उन से भी संस्कृत पढ़ने तथा परिवार में भी संस्कृत का प्रचार करने के लिये अनुरोध करें। साथ ही उन्हें ऐसा साहित्य भी समर्पित किया जाय जिसके द्वारा उनका संस्कृत भाषा में प्रवेश हो सके और वे धर्म, नीति अध्यात्म, सदाचार, सूक्ति तथा सुभाषित आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकें। कुछ पुस्तकें उनके बच्चों तथा उनकी स्त्रियों के लिये भी दी जायँ।

सूचना—कार्यालय द्वारा ऐसे साहित्य का सम्पादन तथा प्रकाशन किया जारहा है। उत्साहसम्पन्न अध्यापकों तथा विद्यार्थियों से हमारा विशेष अनुरोध है कि वे कम से कम सौ दो सौ व्यक्ति के भी घर इस साहित्य को पहुँचाने की कृपा करें। जिन्हें यह कष्ट स्वीकार हो वे कृपा कर पत्रव्यवहार करें।

संस्कृत साहित्यकारों की जयन्ती

१—प्रत्येक विद्यालय तथा संस्कृत प्रचार सभा को चाहिये कि वह अपने क्षेत्र में संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध आचार्यों, ऋषि-मुनियों, कविजनों तथा प्रकाण्ड पण्डितों की जयन्ती मनाने का उद्योग करे। कम से कम व्यास,

वाल्मीकि, शङ्कराचार्य, कालिदास आदि प्रसिद्ध पुरुषों की जयन्ती अनिवार्य रूप से मनानी चाहिये। इन जयन्तियों में तत्तत् महापुरुषों के जीवन, त्याग साधना तथा साहित्यरचना के सम्बन्ध में व्याख्यान दिये जायँ।

२—यदि किसी नगर में अनेक विद्यालय तथा संस्थायें हों तो सबको सम्मिलित रूप में यह उत्सव मनाना चाहिये।

३—जिस महापुरुष की जयन्ती मनायी जाय उसमें उसकी रचनाओं के प्रचार, प्रदर्शन तथा विक्रय का भी प्रबन्ध किया जाय।

संस्कृतानुरागियों का संग्रह

१—देश में बहुत से बड़े बड़े नेता, हिन्दी अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान्, वकील, मुख्तार, मुन्सिफ, जज, कलक्टर, पुलिस अफसर, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, डाक्टर, रेलवे अफसर, डाक कर्मचारी, अन्यान्य विभागों के सरकारी अफसर तथा सेठ साहूकार ऐसे होते हैं जो स्वयं भी कुछ संस्कृत जानते हैं और नहीं भी जानते हैं तो भी हृदय से संस्कृत का प्रचार चाहते हैं। परन्तु हम लोग ऐसे लोगों का पता लगाने, परिचय प्राप्त करने तथा उनसे सम्पर्क बढ़ाने का उद्योग नहीं करते और इसीलिए उनके अमूल्य सहयोग से हम वञ्चित रह जाते हैं। अतः प्रत्येक अध्यापक, विद्यार्थी तथा संस्कृत प्रचार सभा के मन्त्री को अपने क्षेत्र के ऐसे समस्त लोगों का घूम घूम कर तथा पूछ पूछ कर पता लगाना चाहिये, उनसे मिलना चाहिये, उनसे सहयोग प्राप्त करना चाहिये तथा उन्हें संस्कृत पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिये।

२—अ० भा० संस्कृत साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह देश के समस्त संस्कृतानुरागी बड़े बड़े नेताओं से मिलने तथा उनसे सहयोग प्राप्त करने के लिये कभी-कभी एक प्रतिनिधिमंडल भेजा करे।

संस्कृतप्रचारार्थ साधु-संन्यासियों के संगठन तथा शिक्षण का आयोजन

संस्कृत भाषा तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार के लिए कुछ त्यागी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। परन्तु गृहस्थ विद्वानों में सर्वथा त्याग का होना

एक असम्भव बात है, फिर इस महर्घता के युग में और भी। अतः इस कार्य के लिये ऐसे साधु-संन्यासियों का सङ्गठन किया जाय जो संस्कृतज्ञ हैं और प्रचार कार्य में अभिरुचि रखते हैं। आजकल अनेक नवयुवक तथा वृद्ध संन्यासी काशी अयोध्या आदि स्थानों में संस्कृत पढ़ रहे हैं। यदि इनका संगठन किया जाय तथा संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में भाषण देने एवं जनता में प्रचार करने की कला सिखाई जाय तो ये लोग बिना व्यय के बहुत कुछ प्रचार कार्य कर सकते हैं। इस कार्य के लिए तब तक कम से कम काशी प्रयाग, अयोध्या और हरिद्वार में एक एक ऐसे उपदेशक विद्यालय चलाये जाँय जिनमें संस्कृतज्ञ साधुसन्यासियों को संस्कृत तथा हिन्दी में व्याख्यान देने तथा प्रचार करने की समुचित शिक्षा दी जाय।

२—जिन विद्यालयों में अधिक संख्या में साधु-सन्यासी पढ़ते हों वहाँ उन्हें व्याख्यान देने की भी शिक्षा देने का प्रबन्ध करना चाहिए।

३—रामकृष्ण मिशन तथा भारत सेवाश्रम संघ आदि संस्थाओं में अनेक नवयुवक तथा वृद्ध साधु-सन्यासी समाजसेवा की दृष्टि से कार्य करते हैं पर उनमें संस्कृतज्ञ बहुत कम होते हैं। यदि उन्हें संस्कृतशिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाय तो वे अधिक सफल हो सकते हैं। संस्कृत की सभाओं तथा संस्कृत के विद्वानों को चाहिये कि वे अपने समीपवर्ती इन साधु-सन्यासियों को संस्कृत सिखाने का प्रबन्ध करें।

संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का प्रचार

किसी भाषा के पत्र एवं पत्रिकाओं का प्रचार भी उस भाषा के अधिकाधिक प्रचार का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। यह सौभाग्य की बात है कि संस्कृत में भी विभिन्न स्थानों से अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक एवं षाड्मासिक पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं। परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि संस्कृत के विद्यालयों में, स्कूल-कालेजों में तथा पुस्तकालयों एवं वाचनालयों में इन पत्र-पत्रिकाओं का अत्यन्त विरल प्रचार है। अनेक बड़े बड़े संस्कृत महा विद्यालयों तक में संस्कृत की कोई पत्रिका नहीं आती।

यह स्थिति पत्रिकाओं का विक्रय तथा संस्कृत का प्रचार दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त शोचनीय है। अतः संस्कृत के विद्वानों तथा प्रेमियों को चाहिये कि वे स्वयं भी एक एक पत्रिका मँगावे तथा समीपवर्ती शिक्षा-संस्थाओं एवं पुस्तकालय आदि में भी मँगवाने के लिये प्रयत्न करें।

सूचना—कार्यालय द्वारा समस्त संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की सूची, प्राप्ति-स्थान तथा मूल्य के साथ, प्रकाशित की गई है जो २० न० पै० का टिकट भेज कर मँगाई जा सकती है।

संस्कृतप्रचार के लिए आर्यसमाज में पुनः उत्साह की आवश्यकता

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तानुसार वेदविद्या तथा संस्कृत भाषा का प्रचार प्रत्येक आर्यसमाज संस्था तथा आर्यसमाजी व्यक्ति का परम कर्तव्य था। परन्तु इस समय इनमें भी बहुत शिथिलता आ गई है। अब आवश्यकता इस समय इस बात की है कि वे पुनः इस कार्य में उत्साह के साथ जुट जाँय। आशा है वे इधर ध्यान देने की कृपा करेगें।

गुरु-पुरोहितों का संस्कृत शिक्षण

भारतवर्ष में तथा विदेशों में भी कोई ऐसा हिन्दू परिवार नहीं जिसका कोई दीक्षागुरु और पुरोहित न हो। पर ये दीक्षागुरु और पुरोहित अधिकांश में संस्कृत के समुचित ज्ञान से हीन रहते हैं। इनमें भी दीक्षागुरु तो प्रायः अधिकतर सर्वथा निरक्षर ही होते हैं। यदि इनमें संस्कृत का समुचित ज्ञान हो और ये अपने शिष्यों ओर यजमानों में संस्कृत का प्रचार करना चाहें तो एक वर्ष के भीतर ही कोई ऐसा हिन्दू परिवार नहीं मिलेगा जो संस्कृत के साधारण ज्ञान से भी अछूता रह जाय।

अतः संस्कृत सभाओं तथा संस्कृत के विद्वानों को चाहिये कि वे अपने समीपवर्ती गुरु-पुरोहितों को एकत्र कर उन्हें संस्कृत की शिक्षा देने का प्रबन्ध करें ओर अपने शिष्यों एवं यजमानो में संस्कृतप्रचारार्थ उन्हें प्रोत्साहित करें।

इसके लिए संस्कृत सम्मेलनों के अवसर पर तथा कभी २ स्वतन्त्र रूप से भी गुरुपुरोहितों का सम्मेलन करना चाहिए और उन्हें उनके कर्तव्यपालन की ओर आकृष्ट करना चाहिये। इस काम को यदि धार्मिक सभायें अपने हाथ में लें तो बहुत उत्तम हो।

पण्डा-पुजारियों का संस्कृत शिक्षण

प्रायः समस्त हिन्दू तीर्थों में सैकड़ों की संख्या में पण्डा रहते हैं पर उनमें कदाचित् ही कोई संस्कृतज्ञ मिले। फिर भी वे संकल्प, श्राद्ध तथा पूजापाठ आदि सब धार्मिक कृत्य निर्भय होकर कराते हैं और उससे अर्थोपार्जन करते हैं। पर यह उनके तथा तीर्थयात्री दोनों के लिये महान् अनर्थ की बात है। विशेषतः धर्मसभाओं के लिये तो यह और भी लज्जा का विषय है।

अतः संस्कृत सभाओं तथा धर्मसभाओं को चाहिये कि वे अपने समीपवर्ती तीर्थों के पण्डा-पुजारियों को संस्कृत का आवश्यक ज्ञान प्राप्त कराने के लिये प्रबन्ध करें। तीर्थस्थ संस्कृत के विद्वानों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये।

नेताओं में सस्कृत प्रचार

आजकल सरकारी अथवा गैरसरकारी सारा काम नेताओं के अधिकार तथा प्रभाव में चला गया है। बिना इनके सहयोग के काम नहीं होता। अतः, मेरे विचार से, इन नेताओं में संस्कृत का प्रचार करना आवश्यक है जिससे ये संस्कत का महत्त्व समझें तथा उसकी उन्नति में सहायता पहुँचा सकें। संस्कृत के समस्त विद्वानों तथा सुयोग्य विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने समीपवर्ती समस्त नेताओं को संस्कृत पढ़ाने तथा उन्हें संस्कृत की ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न करें। समाजवादी तथा साम्यवादी नेताओं को तो विशेप रूप से, कुछ हानि सहकर भी, सस्कृत पढ़ानी चाहिए। किसी भी छोटे से बड़े नेता को बिना कुछ संस्कृत पढ़ाये और बिना अपना आभारी बनाये नहीं छोड़ना चाहिये।

सूचना—जो विद्वान अथवा विद्यार्थी यह कष्ट करना चाहें उन्हे हमारे कार्यालय से प्रकाशित "संस्कृत शिक्षा के सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध नेताओं तथा विद्वानों के विचार" नामक पुस्तक देखनी चाहिये । इस पुस्तक की सहायता से वे नेताओं को अपनी ओर आकृष्ट कर सकेगें ।

मुसलमानों में संस्कृत प्रचार

संस्कृत की अबाध रूप से उन्नति करने के लिये अपने देश के मुस्लिम समाज को भी संस्कृत की ओर आकृष्ट करने की आवश्यकता है । संस्कृत समाज को चाहिये कि अपने देश में प्रजातंत्र शासन पद्धति को देखते हुए वह समस्त भारतीय प्रजा को अपने अनुकूल बनाने की ओर ध्यान रक्खे ।

सूचना—इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये कार्यालय से यथासम्भव शीघ्र प्रकाशित होने वाली "संस्कृत और मुसलमान" नामक पुस्तक देखनी चाहिये ।

स्थान एवं वेतन की वृद्धि के लिये राज्य से सहायता प्राप्त करने के लिये आन्दोलन

१—प्रत्येक विद्यालय के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को चाहिये कि वे समय समय पर अपने विद्यालय में अथवा सार्वजनिक रूप में सभा कर संस्कृत पाठशालाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने, अध्यापकों का वेतन-स्तर ऊँचा करने, अंग्रेजी स्कूलों में कम से कम हाईस्कूल तक संस्कृत को अनिवार्य करने, संस्कृतज्ञों के कार्यक्षेत्र को विस्तृत करने तथा संस्कृत सम्बन्धी अपनी सदिच्छाओं तथा घोषणाओं को कार्यरूप में परिणत करने के लिये राज्य तथा केन्द्र से अनुरोध करें तथा इसके लिये प्रबल आन्दोलन चलावें ।

शिक्षा संस्थाओं के अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों में भी संस्कृतज्ञों की नियुक्ति के लिये आन्दोलन चलाया जाय—

१—संस्कृत शिक्षा संस्थाओं के कार्यालयों में संस्कृतज्ञ ही लेखक और कर्मचारी रक्खें जाँय ।

२—प्रत्येक कारागार (जेल) में धर्मोंपदेश तथा संस्कृतशिक्षणार्थ एक एक परिडत रक्खे जाँय तथा स्वास्थ्य निरीक्षणार्थ एक एक आयुर्वेदाचार्य भी।

३—पुलिस विभाग में भी उपर्युक्त कार्यों के लिये एक परिडत तथा एक वैद्य नियुक्त किये जाँय।

४—ग्रामसुधार तथा ग्रामपञ्चायत विभाग में भी धर्मोपदेशार्थ संस्कृत के एक एक वक्ता विद्वान नियुक्त किये जाँय।

५—न्यायालय एवं रजिस्ट्री आफिसों में शुद्ध हिन्दी एवं संस्कृत में दस्तावेज आदि लिखने के लिये संस्कृतज्ञों की नियुक्ति की जाय।

६—मठों में संस्कृत के विद्वान् ही मठाधीश बनाये जाँय।

७—मन्दिरों में संस्कृत के विद्वान् ही पूजा का काम करें।

८—तीर्थों में शुद्ध संस्कृत में संकल्प श्राद्ध आदि करा लेने योग्य पुरुष ही पराडा का काम करें।

९—सरकारी अवकाश सूची (तातिलनामा) बनाने के लिये एक धर्मशास्त्री तथा ज्योतिषी का पद निश्चित किया जाय।

धार्मिक स्थानों में संस्कृत प्रचार तथा उनके द्रव्य का संस्कृत प्रचारार्थ विनियोग

अपने देश में अनेक मठ-मन्दिर आदि ऐसे धार्मिक स्थान हैं जिनके पास बहुत बड़ी सम्पत्ति है पर उसका उचित उपयोग नहीं होता। यद्यपि कुछ स्थानों में संस्कृत पाठशालायें भी चलती हैं पर उनकी भी स्थिति जैसी होनी चाहिए वैसी नहीं रहती क्योंकि उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। इन स्थानों में बहुत बड़ी संख्या में साधु सन्त, पुजारी तथा कर्मचारी रहते हैं पर वे भी संस्कृत पढ़ने की ओर ध्यान नहीं देते। यहाँ तक कि मठ में ही पाठशाला के रहते हुए भी महन्थ जी तक संस्कृत का एक अक्षर नहीं जानते फिर और लोगों की तो बात ही क्या ! धार्मिक स्थानों की यह दशा नितान्त

धर्म-विरुद्ध तथा सर्वथा अशोभनीय है। अतः संस्कृत सभाओं को ऐसा आन्दोलन उठाना चाहिये जिससे उन धार्मिक स्थानो में रहने वाले सभी साधु-सन्त तथा कर्मचारी संस्कृतज्ञ हों तथा इनकी सम्पत्ति का संस्कृत के तथा विशेष कर धार्मिक साहित्य के प्रचार में पूर्ण रूप से विनियोग हो सके।

पुरस्कार-निर्धारण

हिन्दी में विभिन्न विषयों पर उच्च कोटि की मौलिक पुस्तकों के लिखने के लिये जिस प्रकार राज्य की ओर से तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि संस्थाओं की ओर से अनेक प्रकार के पुरस्कार निर्धारित किये गये हैं उसी प्रकार अ० भारतीय, प्रान्तीय तथा सम्भव हो तो जनपदीय संस्कृत साहित्य सम्मेलनों की ओर से भी कम से कम १००) से लेकर १–२ हजार तक के पुरस्कारों का निर्धारण करना चाहिये। ये पुरस्कार उन संस्कृत लेखकों को दिये जाँय जो संस्कृत साहित्य को कोई नवीन मौलिक रचना दे सकें। संस्कृत में जिन विविध नवीन विषयों पर पुस्तकों के लिखने की आवश्यकता है वे कुछ निम्नांकित हैं—

१. गद्य काव्य। २. एकांकी नाटक। ३. आधुनिक घटनाओं से सम्बन्ध रखने वाले नाटक। ४. विज्ञान। ५. मनोविज्ञान। ६. पाश्चात्यदर्शन। ७ सदाचार शास्त्र। ८. प्राचीन काल का इतिहास। ९. आधुनिक इतिहास। १०. समाज विज्ञान। ११. भाषा विज्ञान। १२. राजनीति।

अप्रचलित ग्रन्थों का अध्ययन एवं प्रचार

संस्कृत में अर्थ शास्त्र, नीति शास्त्र, सङ्गीत शास्त्र, शिल्प शास्त्र, श्यैनिक शास्त्र, अश्व शास्त्र, गज शास्त्र, कृषि शास्त्र तथा युद्ध शास्त्र आदि ऐसे अनेक विषय एवं ग्रन्थ हैं जिनका संस्कृत समाज में पठन-पाठन सर्वथा लुप्त हो गया है। अतएव इन विषयों के उपलब्ध ग्रन्थों को समझने-समझाने वाले पण्डित नहीं के बराबर हैं। अतः योग्य छात्रों तथा विद्वानो को चाहिये कि वे पाठ्य ग्रन्थों के अतिरिक्त इन ग्रन्थों का भी अवलोकन करें तथा उन्हें ठीक-ठीक

समझने की योग्यता प्राप्त करें। इन ग्रन्थों का तथा इनके सर्वसाधारणो-पयोगी अंशो का हिन्दी अनुवाद के साथ यथासम्भव प्रकाशन भी करना चाहिये।

वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय को चाहिये कि वह कम से कम वाराणसी में ऐसी व्यवस्था अथवा करे। उपर्युक्त विषयों में से जिस विषय की ओर अभिरुचि रखने वाले जो विद्वान हों उन्हें उस विषय के अध्ययनमें लगाया जाय और उन्हें आवश्यक सहयोग दिया जाय।

विशेष-अध्ययन का आयोजन

हिन्दी जगत् में अनेक ऐसे विद्वान् हैं जो सूरसाहित्य तुलसीसाहित्य सन्त-साहित्य आदि विषयों तथा कुछ विशिष्ट ग्रन्थो में से एक एक विषय तथा ग्रन्थ के विशेषज्ञ माने जाते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति संस्कृत समाज में भी उत्पन्न करनी चाहिये। संस्कृत के नवयुवक विद्वानों को अपनी-अपनी रुचि के अनुसार किसी विशेष विषय तथा ग्रन्थ का विशिष्ट रूप से अध्ययन करना चाहिये तथा उसका वस्तुतः विशेषज्ञ बनना चाहिये। कभी कभी इन विशेषज्ञों का सम्मेलन भी होना चाहिये जिसमें वे अपने विशेष अध्ययन का परिचय दे सकें। इस प्रकार के विशेष अध्ययन तथा सम्मेलन का आयो-जन प्रत्येक विशिष्ट विद्यालय तथा नगर में हो सकता है।

सूचना—विशेषज्ञ बनने के लिए विद्वानों को तत्तद् विषयों एवं ग्रन्थों के अध्ययन में आधुनिक विद्वानों द्वारा लिखित आलोचनात्मक निबन्धों का भी पर्याप्त अध्ययन करना पड़ेगा। जिन विशेषज्ञ बनने के इच्छुक सज्जनों को संस्कृत साहित्य विषयक आधुनिक गवेषणापूर्ण निबन्धों का परिचय प्राप्त करना हो वे इस विषय में कार्यालय से पत्रव्यवहार करें।

संस्कृत-साहित्य-सेवियों का सम्मान तथा उन्हे सहयोग प्रदान

भ्रमण, व्याख्यान, प्रचार, पत्रप्रकाशन, प्राचीन साहित्योद्धार, अभिनव साहित्य निर्माण तथा अनुसन्धान आदि द्वारा जो विद्वान् संस्कृत भाषा एवं

साहित्य की सेवा कर रहे हैं उन्हें सम्मान तथा सहयोग प्रदान द्वारा प्रोत्साहित किया जाय। समस्त संस्कृत सभाओं तथा अ० भा० संस्कृत साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह ऐसे विद्वानों का अभिनन्दन करे, उनके नाम से अभिनंदन ग्रन्थ निकाले, उनकी अप्रकाशित उत्तम कृतियों के प्रकाशन का प्रबन्ध करे तथा उनके कार्य में आर्थिक सहयोग प्रदान करे। सभाओं को अपने प्रत्येक अधिवेशन में किसी ऐसे व्यक्ति का अवश्य समादर करना चाहिए।

यह बड़े ही खेद का विषय है कि अनेक प्रतिभासम्पन्न विद्वानों की बहुमूल्य कृतियाँ अर्थाभाव के कारण प्रकाशित नहीं हो पातीं और उनके लाभ से समाज वञ्चित रह जाता है। जो कुछ नवीन कृतियाँ येन केन प्रकारेण प्रकाशित भी होती हैं तो वे प्रचार का कोई समुचित साधन न होने से समाज के सामने नहीं आतीं। संस्कृत सभाओं को इस त्रुटिको दूर करने की ओर पूर्णध्यान देना चाहिये।

बौद्ध तथा जैन संस्कृत ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं समादर

सनातन हिन्दू साहित्य के अतिरिक्त बौद्ध तथा जैन साहित्य में पाली-प्राकृत के अतिरिक्त संस्कृत भाषा में भी अनेक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गये हैं पर धार्मिक मतभेद तथा इन ग्रन्थों के सर्वत्र सुलभ न होने के कारण संस्कृत के ब्राह्मण विद्वान उन ग्रन्थों को न तो जानते हैं और न उनका स्वाध्याय ही करते हैं और इसी लिए उन ग्रन्थों के प्रति वे विशेष आदरभाव भी नहीं रखते। परन्तु संस्कृत भाषा की विशालता एवं महत्ता के ज्ञान, संरक्षण तथा प्रचार की दृष्टि से संस्कृत के विद्वानों को बौद्ध तथा जैन विद्वानों की भी अमूल्य कृतियों का संग्रह, स्वाध्याय तथा समादर करना चाहिये।

संस्कृत-प्रचार-परीक्षाओं का प्रवर्तन

१—समस्त हिन्दी-अंग्रेजी-शिक्षित समाज में संस्कृत प्रचार करने के लिये संस्कृत की कुछ अत्यन्त सरल परीक्षाओं के भी प्रवर्तन एवं प्रचार की आव-

श्यकता है। स्वाध्यायमण्डल, पारडी जिला सूरत, भारतीय विद्या भवन, चौपाटी, बम्बई, संस्कृत भाषा प्रचारिणी सभा, चित्तूर (आन्ध्र) आदि संस्थाओं की ओर से इस प्रकार की कुछ परीक्षायें चल रही हैं। संस्कृत प्रचार के इच्छुक सज्जन यदि वहाँ से नियमावली मँगाकर उन परिक्षाओं का प्रचार एवं आयोजन करें तो बहुत लाभ हो सकता है।

२—वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय तथा अ० भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन को भी इस प्रकार की सुगम परीक्षाओं के प्रवर्तन तथा प्रचार के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

संस्कृत वाद-विवाद-प्रतियोगिता

संस्कृत तथा हिन्दी अंग्रेजी विद्यालयों में वार्षिकोत्सवों के अवसर पर संस्कृत में वादविवाद प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता तथा निबन्ध पाठ प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहिये, उसमें सम्मिलित होने के लिए विभिन्न विद्यालयों के छात्रों को आमन्त्रित करना चहिये तथा विजयी छात्रों को पुरस्कार देने की भी व्यवस्था करनी चाहिये। सम्भव हो तो संस्कृत वाद विवाद में विजयी छात्र को देने के लिये कोई रजत सुवर्णमय "विजय चिह्न" भी बनवाना चाहिये।

जातीय-सभाओं से संस्कृत प्रचारार्थ अनुरोध

इस समय देश में अनेक जातीय सभायें चल रही हैं जो अपनी अपनी जाति के लिये प्रयत्नशील हैं। इन सभाओं के सञ्चालकों से अनुरोध किया जाय कि वे अपनी सभाओं में शिक्षाप्रचार के प्रसंग में संस्कृत पढ़ने के लिये भी अपने जाति-भाइयों को प्रोत्साहित करें तथा उन्हें संस्कृत की शिक्षा देने के लिये कोई योजना बनावें।

संस्कृत सभाओं के मन्त्रियों तथा संस्कृत के विद्वानों को चाहिये कि जब कभी भी उनके समीप कोई ऐसी सभा हो तो वहाँ जाकर उसके सञ्चालकों से संस्कृत प्रचारार्थ अनुरोध करें।

राष्ट्रिय तथा सामाजिक कार्यों में सहयोग प्रदान

अन्यान्य कारणों के अतिरिक्त संस्कृत के अधिकांश पण्डितों एवं विद्यार्थियों का देश, जाति या समाज के हित के लिये सञ्चालित किसी भी आन्दोलन य कार्य में भाग न लेकर सर्वथा पृथक् रहना भी संस्कृत के प्रति लोगों के मन में अरुचि एवं अश्रद्धा होने का एक प्रधान कारण है। संस्कृतसमाज को राष्ट्रिय तथा सामाजिक कार्यों से उदासीन देख कर जनता के हृदय में यह भाव घर कर गया है कि संस्कृत के पण्डित और विद्यार्थी केवल स्वार्थपरायण, दक्षिणार्थी, भोजन-भट्ट, परम आलसी, लोलुप, अदेशकालज्ञ और देश, जाति एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व से विहीन होते हैं। अतएव जनता प्रायः संस्कृत का महत्त्व मानती हुई भी संस्कृतसमाज से तथा उसके साथ ही संस्कृत से भी उदासीन रहती है। अतः संस्कृत के विद्वानों, विद्यार्थियों तथा संस्कृतसभाओं के कार्यकर्त्ताओं को चाहिये कि वे अपने आस पास चलने वाले देशहितकारी सभी कार्यों तथा आन्दोलनों में पूर्ण भाग लें तथा यथासम्भव सबसे आगे रहने का प्रयत्न करें। ऐसा करने से समाज में सम्मान होगा और संस्कृत प्रचार सम्बन्धी कार्यों में सबकी सहानुभूति भी प्राप्त की जा सकेगी।

अन्य लोगों द्वारा सञ्चालित कार्यों में सहयोग देने के अतिरिक्त यदि संस्कृत समाज अपनी ओर से भी कुछ लोकसेवा का कार्य आरम्भ करे तो और भी उत्तम हो। ऐसे कुछ कार्य निम्नलिखित हो सकते हैं—

१—स्थान-स्थान पर पुस्तकालय वाचनालय आदि चलाना।

२—पाठशाला की ओर से गावों में अखबार पहुँचाने का काम करना।

३—मल्लशाला, सामूहिक खेल-कूद एवं मनोरंजन आदि का आयोजन करना और सिनेमा आदि के गन्दे गीतों तथा दृश्यों का विरोध करना।

४—हैजा, प्लेग, बाढ़, अगलग्गी आदि के समय जनता की सेवा करना।

५—हरिजन आदि निम्न जाति के लोगों के गाँव में जाकर उनमें शिक्षा, सदाचार, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी बातें सिखाना, उनमें जो दुर्व्यसन हैं उनसे बचने के लिये अनुरोध करना तथा उनसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना।

६—कम से कम महीने में एक दिन अवश्य ही कहीं न कहीं सभा करके जनता को धार्मिक सामाजिक तथा राजनितिक बातें बतलाना।

७—बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, कन्या विक्रय, तिलक दहेज, अपव्यय, मादक वस्तुओं का सेवन, हृष्ट-पुष्ट भिक्षुओं द्वारा भिक्षाटन, गुरु, पुरोहित, साधु, महन्थ पण्डा, पुजारी आदि की विद्याहीनता एवं अनाचार, विधवाओं की दुर्दशा, अछूतों से घृणा, जनता के बीच वेश्याओं का निवास, मजदूर श्रेणी के लोगों की बेकारी, निर्धनों एवं निर्बलों का शोषण तथा उत्पीड़न, सरकारी कर्मचारियों का अन्याय एवं भ्रष्टाचार, मठ मन्दिरों की सम्पत्ति का दुरुपयोग तथा आर्थिक अन्याय आदि जितने धर्मविरुद्ध काम समाज में चल रहे हैं उनका साहसपूर्वक विरोध करना तथा समयानुसार उसे दूर करने के लिये आन्दोलन चलाना।

८—गरीब लोगों का यज्ञोपवीत विवाह तथा श्राद्ध आदि कार्य बिना दक्षिणा के और सचाई साथ करा देना तथा सहयोग प्रदान करना।

९—पर्व उत्सव आदि के मनाने में जनता को सहयोग देना।

१०—व्रत पर्व उत्सव आदि की सूची छपाकर जनता में प्रतिवर्ष वितरण करना।

११—समाजसेवासम्बन्धी सरकारी योजनाओं में रचनात्मक सहयोग प्रदान करना।

१२—धार्मिक संस्थाओं तथा धर्माचार्यों के सद्गुणों का आदर करते हुये उनके ढोंग, पाखण्ड, स्वार्थनिष्ठा तथा प्रवञ्चना का प्रबल विरोध करना।

१३—मठ-मन्दिरों तथा तीर्थस्थानों की देख-रेख एवं सुधार करना।

१४—प्रत्येक विद्यालय में इसके लिये एक समाज-सेवक-दल का संगठन होना चाहिये।

संस्कृतप्रचारोपयोगी साहित्य का प्रकाशन

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के व्यापक प्रचार के लिये छोटी बड़ी शताधिक पुस्तकों के सम्पादन तथा प्रकाशन की नितान्त आवश्यकता है। हमारे विचारानुसार निम्नलिखित प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की जानी चाहिये—

१—ऐसी पुस्तकें प्रकाशित की जाँय जिनसे संस्कृत की महत्ता, उपयोगिता तथा उसके पठन-पाठन की आवश्यकता की ओर सब का ध्यान आकृष्ट हो सके।

२—ऐसी पुस्तकें प्रकाशित की जाँय जिनसे स्वल्प समय में सरलता और सुरुचि के साथ सब लोग संस्कृत लिखना, पढ़ना, बोलना तथा समझना सीख सकें।

३—अत्यन्त सरल एवं सुललित संस्कृत में प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षोपयोगी निबन्ध, लेख, नाटक, विनोद, उपन्यास, कथा-कहानी, वार्तालाप, गीत, गल्प एवं मनोरञ्जन की पुस्तकें प्रकाशित की जाँय। इसी प्रकार हिन्दी-संस्कृत के कुछ छोटे-बड़े कोश भी प्रकाशित किये जाँय।

४—वेदों से लेकर काव्य नाटक तक के विशाल संस्कृत वाङ्मय में धर्म, सदाचार, नीति, अध्यात्म, भक्ति, स्वास्थ्य, राजनीति, समाजशास्त्र, न्याय, पञ्चायत, पुलिस, सेवा, कृषि, वाणिज्य, अर्थ, काम, मनोरञ्जन, सूक्ति, उक्ति अन्योक्ति तथा इसी प्रकार के अन्य सभी उपयोगी विषयों से सम्बन्ध रखने वाले श्लोकों मन्त्रों तथा कविताओं का संग्रह कर हिन्दी अनुवाद के साथ पचासों पुस्तकें प्रकाशित की जाँय। इसी प्रकार कुछ अत्यन्त उपयोगी प्राचीन पुस्तकें भी हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित की जायँ।

५—ऐसे शिक्षाप्रद पोस्टर प्रकाशित किये जायँ जो सरकारी तथा गैरसरकारी कार्यालयों, भवनों तथा सर्वसाधारण के घर लगाये जायँ।

सूचना—इस विषय पर कार्यालय द्वारा संस्कृत प्रचार के लिए जितने प्रकार की पुस्तक-पुस्तिकाओं तथा पोस्टरों के प्रकाशन की आवश्यकता है, उनकी एक अलग सूची प्रकाशित की गई है। इस सूची में २७३ पुस्तकों के नाम हैं जिनके सम्पादन तथा प्रकाशन में एक लाख रुपये के व्यय का अनुमान है। जो सज्जन तथा संस्थान इस योजना को देखना चाहते हों उन्हें इस सूची को मँगाकर देखना चाहिए।

संस्कृत प्रचारार्थ हिन्दी पत्र का प्रकाशन

संस्कृत भाषा में अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्र निकलते हैं पर उनसे संस्कृत के विद्वानों को ही लाभ होता है। आजकल एक दो ऐसे

भी पत्र निकल रहे हैं जिनमें आधी संस्कृत तथा आधी हिन्दी होती है जिससे हिन्दी जानने वालों को भी कुछ लाभ होता है पर जो हिन्दीज्ञ सज्जन संस्कृत बिल्कुल नहीं जानते उनके लिए उस पत्र का संस्कृत भाग निरर्थक ही प्रतीत होता है। हमारे विचार से इस समय में एक ऐसे पाक्षिक या मासिक पत्र के संचालन की आवश्यकता है जो केवल हिन्दी के माध्यम से हिन्दी-अंग्रेजी-शिक्षित समाज में संस्कृत की ओर अभिरुचि उत्पन्न करे, उनके लिए संस्कृत ज्ञान वर्द्धक सामग्री प्रस्तुत करे तथा संस्कृत के आन्दोलन को जनता तथा सरकार तक पहुँचा सके। संस्कृत प्रचारक संस्थाओं को इस ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये।

हिन्दी की तरह अन्य भारतीय भाषाओं में भी एक-एक संस्कृत विषय-प्रधान पत्रिकाओं का प्रकाशन होना चाहिये।

संस्कृत में विज्ञापन पट्टों (साइन बोर्डों) का निर्माण, प्रकाशन तथा प्रचार

अब तक समस्त छोटे बड़े दूकानदार अपनी दूकान का साइन बोर्ड अंग्रेजी में अथवा अंग्रेजीशब्दबहुल हिन्दी में रखते थे। परन्तु इस प्रवृत्ति में अब धीरे धीरे परिवर्तन हो रहा है और वे हिन्दी में साइनबोर्ड लगाना चाहते हैं पर उन्हें हिन्दी में ऐसे उपयुक्त शब्द नहीं मिलते जिनका वे प्रयोग कर सकें। क्योंकि हिन्दी में जब कोई नवीन शब्द बनाया जा सकता है तो वह संस्कृत से ही और वे सब इतनी योग्यता नहीं रखते। फिर भी अनेक दूकानों पर शुद्ध या अशुद्ध रूप में संस्कृतशब्दमय साइनबोर्ड देखने में आते हैं। हमारे विचार से हम लोगों को इस कार्य में उनकी सहायता करनी चाहिए। संस्कृत-सभाओं और विशेषकर अ. भा. संस्कृत साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह सभी प्रकार के सम्भव साइनबोर्डों की अंग्रेजी शब्दावली का संग्रह करे, उनके लिये शुद्ध संस्कृत शब्दावली बनावे तथा उन्हें दूकानदारों को दे। इसी प्रकार सरकारी तथा गैरसरकारी आफिसों तथा कल-कारखानों के लिये भी संस्कृत-शब्दावली बनाकर तत्तत् स्थानों पर लगाने के लिये देना चाहिये।

मुझे स्मरण है कि एक बार "जीवन बीमा कम्पनी" के लिए एक संस्था ने संस्कृत शब्द माँगा था और काशी में इसकी बड़ी चर्चा रही। यदि विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों तथा दूकानों के लिये उपयुक्त शब्द बनाकर प्रकाशित कर दिये जाँय तो संस्कृत प्रचार के साथ ही साथ जनता का बहुत बड़ा उपकार भी हो सकता है।

विशिष्ट विद्वानों का संस्कृत प्रचारार्थ भ्रमण

संस्कृत समाज में अनेक ऐसे वृद्ध विद्वान् वर्तमान हैं जो अपने विशिष्ट पाण्डित्य द्वारा बहुत यश प्राप्त कर चुके हैं और उन्हे अब अर्थोपार्जन की भी विशेष आवश्यकता नहीं। ऐसे विद्वान यदि घर और परिवार का मोह छोड़-कर अपनी वृद्धावस्था में भी महात्मा गान्धी तथा विनोवा भावे की तरह संस्कृत प्रचार के लिये, संस्कृत प्रचारार्थ द्रव्यसंग्रह के लिये तथा सरकार द्वारा संस्कृत को उचित स्थान एवं सम्मान दिलाने के लिये पैदल घूमें अथवा पैदल घूमने में असमर्थ होने पर सवारी पर ही घूमें तो उनके पाण्डित्य, वृद्धा-वस्था, त्याग एवं परिश्रम का जनता तथा सरकार पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ सकता है और संस्कृत के उत्थान में बड़ी सहायता मिल सकती है।

अतः ऐसे विद्वानों को जो संस्कृत की ही कृपा से पर्याप्त यश एवं अर्थ कमाकर अब वृद्ध हो गये हैं, संस्कृत का ऋण चुकाने के लिये अविलम्ब तैयार हो जाना चाहिये।

अ. भा. संस्कृत साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह ऐसे विद्वानों की सूची बनावे, उनका संग्रह करे, उन्हे इस कार्य के लिये प्रोत्साहित करे तथा उन्हे सहयोग प्रदान करे।

विदेशों में संस्कृत प्रचार

१—जिस प्रकार अपने देश के समस्त हिन्दु समाज में प्रचार की आवश्यकता है उसी प्रकार विदेशों में जो हिन्दू बसे हुए हैं उनमें भी संस्कृत प्रचार करने की आवश्यकता है। यहाँ के संस्कृतानुरागी हिन्दू पुस्तकों को खरीद कर अथवा समीपवर्ती किसी संस्कृत के विद्वान से सुविधा से ही संस्कृत

सीख सकते हैं परन्तु जो हिन्दू विदेशों में बसे हुए हैं उनके लिये ये दोनों सुविधायें दुर्लभ हैं। अतः हम भारत निवासियों का यह कर्तव्य है कि हम अपने प्रवासी भाइयों को संस्कृत पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करें तथा उन्हें सब प्रकार की सहायता पहुँचावें।

२—यह सहायता दो प्रकार की हो सकती है। एक तो यह कि हम लोग जिन देशों में हिन्दू बसे हुए हैं उन देशों में उन्हें संस्कृत पढ़ाने के लिए कुछ विद्वानों को भेजें। दूसरा यह कि उनके समीप हम ऐसी पुस्तकें भेजें जिनके द्वारा वे स्वयं भी संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इनमें से प्रथम प्रकार तो कठिन है पर दूसरे प्रकार से सब लोग यथाशक्ति सहायता पहुँचा सकते हैं। अतः प्रत्येक विद्वान, विद्यार्थी, संस्कृत प्रचार सभा, संस्कृत विद्यालय तथा संस्कृतानुरागी सज्जन को चाहिए कि वे इस कार्य में यथाशक्ति अवश्यमेव सहायता प्रदान करें।

सूचना—विदेशों में कहाँ कितने हिन्दू हैं और उन्हें किस प्रकार संस्कृत की शिक्षा दी जा सकती है इस विषय में हम तत्तत् देशों के प्रतिष्ठित हिन्दुओं तथा हिन्दु सभाओं के साथ पत्र व्यवहार कर रहे हैं। साथ ही उनके पास भेजने योग्य साहित्य का भी सम्पादन एवं प्रकाशन हो रहा है। उनके समीप ऐसी पुस्तकों के भेजने की आवश्यकता है जिनसे वे संस्कृत सीख सकें और पूजापाठ, धर्म, नीति, सदाचार, वेद, उपनिषद् एवं संस्कृत के काव्य नाटक आदि का भी उन्हें समान्य ज्ञान प्राप्त हो सके। एतदर्थ एक-एक पुस्तक की लाखों प्रतियों के छपाने की आवश्यकता है। मैं प्रत्येक संस्कृतानुरागी सज्जन से किसी एक पुस्तक की एक हजार प्रतियों के प्रकाशन में सहायता प्रदान करने के लिये अनुरोध करता हूँ। उस पुस्तम में यह प्रकाशित किया जायगा कि "अमुक व्यक्ति ने प्रवासी हिन्दुओं में संस्कृत भाषा तथा धर्म के प्रचारार्थ इस पुस्तक के प्रकाशन में इतनी सहायता प्रदान की।" जो महानुभाव इस पवित्र कार्य में सहायता प्रदान करना या कराना चाहें वे पत्र द्वारा हमें सूचित करने की कृपा करें।

नये सुझावों के लिये पाठकों से निवेदव

इस पुस्तक में संस्कृत प्रचार के जितने उपाय लिखे गये हैं उनके अतिरिक्त अन्य तत्सम्बन्धी सुझावों के लिये ये दो पृष्ठ खाली रखे गये हैं। पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझावों को यहाँ अंकित करें और उनसे इस लेखक को भी अवगत कराने की कृपा करें।

१—

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
डी० ३८. २० हौज कटोरा
वाराणसी

आवृत्ति : द्वितीय
संख्या : एक सहस्र
मूल्य : पचास न० पै०

मुद्रक—
बैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वार